विचार बिन्दु

कठिनाइयों को जीतने, वासनाओ का दमन करने और दुःखों को सहन करने से चरित्र उच्च सुदृढ़ और निर्मल होता है। –अज्ञात

लू के थपेड़ों के बीच सरकार की संवेदनशीलता

देश के अधिकांश हिस्सों में हीटवेव के कारण हालात बद से बदतर हो रहे हैं। जनजीवन पूरी तरह अस्त-व्यस्त हो रहा है तो सड़कों पर कफ्र्यू जैसे हालात हो रहे हैं। इसके चलते असली समस्या तो सरकार के सामने पानी, बिजली और हीटवेव से प्रभावित लोगों को तत्काल ईलाज की व्यवस्था सुनिश्चित करना है। वैसे तो चुनावों के कारण आदर्श आचार संहिता लागू होने के बावजूद सभी प्रदेशों की सरकारें बेहतर प्रबंधन का प्रयास कर रही है। पर राजस्थान की सरकार ने गंभीरता बरतते हुए पूरी मशीनरी को इस आपदा के समय लोगों को राहत पहुंचाने में जुटा दिया है। राजस्थान के मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा हीटवेव की इस प्राकृतिक आपदा के बीच दोपहरी जयपुर की सड़कों पर उतर कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया है वह अपने आप में काबिले तारीफ है। ठेठ देसी अंदाज में सिर पर स्वापी लपेटकर 29 मई को जयपुर के रामनिवास बाग स्थित पेयजल सप्लाई केन्द्र और गांधीनगर स्थित जलभवन में जाकर व्यवस्थाओं का जायजा लिया इससे मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा की संवेदनशीला का पता चलता है। मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा 29 मई को जहां स्वयं भर दोपहरी सिर पर गमछा लपेट राजस्थान की राजधानी जयपुर में पेयजल व्यवस्था को देखने निकल पड़े तो निश्चित रुप से प्रशासन और आमजन में एक संदेश गया हैं। इसके साथ ही प्रदेश की वरिष्ठतम मशीनरी को सक्रिय करते हुए दो दिन के लिए प्रभार वाले जिलों में भेजकर इस हीटवेव के हालातों में पानी, बिजली और दवा की उपलब्धता सुनिश्चित कराने की पहल की है, इससे समूचे देश में एक मैसेज गया है। प्रदेश के सभी जिलों में 28 व 29 मई को दो दिन के लिए सभी प्रभारी सचिवों को प्रभार वाले जिलों में जाकर पानी, बिजली, दवा, ईलाज आदि की व्यवस्थाओं का जायजा लेने भेजकर साफ संकेत दिए कि सरकार हीटवेव की इस आपदा में प्रदेश में आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित रखने के लिए प्रतिवद्ध है। सरकार की गंभीरता को इसी से समझा जा सकता है कि जहां दो दिन तक सरकार के वरिष्ठ अधिकारी इस गर्मी के मौसम में अपने कार्यालयों से निकल कर जिलों में स्थानीय प्रशासन व जिले के अधिकारियों के साथ व्यवस्थाओं की समीक्षा की, वहीं आपदा के इस दौर में आवश्यक दिशा-निर्देश देकर लोगों को राहत पहुंचाने में जुट गए हैं। बात यहीं समाप्त नहीं हो जाती क्योंकि मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा और मुख्य सचिव सुधांश पंत स्वयं प्रभारी सचिवों व जिला कलक्टरों सहित अधिकारियों से 31 मई को संवाद कायम कर फीड बैक लेने के साथ ही आवश्यक दिशा-निर्देश दिए हैं। यह पहल अपने आपमें सराहनीय है। राजस्थान की सरकार ने अन्य राज्यों के सामने एक उदाहरण रखा है।

लोकसभा चुनावों के मतदान के अंतिम चरण आज पूरा होने जा रहा है और सियासी पारा चढ़ने के साथ ही उम्मीद्वारों की धड़कनें तेज होती जा रही हैं उसी तरह से देश में उत्तर, पश्चिम, मध्य और पूर्वी भारत के तापमान में भी दिन-प्रतिदिन तेजी आती जा रही है। एक और जहां समग्र मतदान प्रतिशत 2019 के स्तर पर नहीं आ पा रहा हैं वहीं सूर्यदेव नित नए रेर्काड बनाने में लगे हैं। 29 मई को देश की राजधानी दिल्ली का पारा 52 के आंकड़ें को छू गया, हो सकता है इसको लेकर कोई मत भिन्नता हो पर इसमें कोई दो राय नहीं कि दिल्ली का पारा 50 डिग्री से तो ज्यादा ही रहा है। देश के 17 से अधिक शहरों में तापमान उच्चतम स्तर पर चल रहा है। यह एक तरह का प्राकृतिक आपात्काल है। हीटवेव या यों कहें कि लू के थपेड़ों ने जनजीवन को बुरी तरह से प्रभावित करके रख दिया है। लू या हीटवेव या तापघात के कारण देश के विभिन्न हिस्सों में मौत के समाचार भी आ रहे हैं। तस्वीर का एक पहलू यह है कि अभी तक सही मायने में हमारे देश में हीटवेव को डिजास्टर मैनेजमेंट में पूरी तरह से शामिल नहीं किया गया है। कहीं कहीं सड़कों पर पानी छिड़कने या लोगों को घर या कार्यस्थल से बाहर नहीं निकलने की सलाह दी जाती रही है। लू से बचाव के उपायों खासतौर से खाली पेट नहीं रहने और तरल पदार्थ का अधिक से अधिक सेवन करने की सलाह दी जाती है। हांलाकि अब माननीय न्यायालय ने भी हीटवेव को भी आपदा घोषित कर प्रभावितों को सहायता देने की टिप्पणी की है।

राजस्थान के मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा हीटवेव की इस प्राकृतिक आपदा के बीच दोपहरी जयपुर की सड़कों पर उतर कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया है वह अपने आप में काबिले तारीफ है। ठेठ देसी अंदाज में सिर पर स्वापी लपेटकर 29 मई को जयपुर के रामनिवास बाग स्थित पेयजल सप्लाई केन्द्र और गांधीनगर स्थित जलभवन में जाकर व्यवस्थाओं का जायजा लिया इससे मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा की संवेदनशीला का पता चलता है।

देखा जाए तो 1850 के बाद 2023 का साल सबसे गर्म साल रहा है पर जिस तरह से तापमान दिन-प्रतिदिन बढ़ रहा है उससे साफ हो जाता है कि 1850 के बाद 2023 नहीं बल्कि अब तो 2024 सबसे गर्म साल रहने वाला है। समूचा उत्तरी, पश्चिमी, मध्य और पूर्वी भारत हीटवेव के चपेट में आ गया है। देश की राजधानी दिल्ली के साथ ही राजस्थान, हरियाणा, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, बिहार, उत्तर प्रदेश, विदर्भ आदि गंभीर हीटवेव से प्रभावित इलाके हैं। राजस्थान के चुरु और फलोदी आदि का पारा तो 50 के आसपास ही चल रहा है। हीटवेव के कारण जहां जनजीवन बुरी तरह से प्रभावित हो रहा है वहीं प्रभावित राज्यों में पानी, बिजली और हीटवेव के कारण बीमारी के हालात गंभीर होते जा रहे हैं। इतनी तेज गर्मी में पेयजल की उपलब्धता और बिजली की आपूर्ति व ट्रिपिंग की समस्या से निजात पाना प्रशासन के लिए मुश्किल हो रहा है।

सामान्यत: एक मार्च से लेकर 21 जून तक सूर्य देव धरती के नजदीक होते हैं। यही कारण है कि इस दौरान गर्मी का प्रकोप अधिक रहता है। हमारे यहां तो नौतपा की चर्चा सनातन रुप से की जाती रही है। इस समय देशी पंचाग के अनुसार नौतपा चल रहा है और माना जाता है कि इन नौ दिनों तक गर्मी का असर कुछ अधिक ही रहता है। इसके बाद तो बादलों की आवाजाही शुरु होने से सोलर रेडियेशन होने लगता है और उसका असर उमस के रुप में सामने आता है। भारतीय मौसम विज्ञान विभाग के प्रमुख मृत्युजंय महापात्र के अनुसार आने वाले दिनों में पश्चिमी विक्षोभ और अरब सागर में नमी के कारण गर्मी से राहत मिने के आसार अवश्य है। पर सवाल यह है कि इस भीषण लू या यों कहें कि हीटवेव के लिए बहुत कुछ हम भी जिम्मेदार है। आज शहरी करण और विकास के नाम पर प्रकृति को विकृत करने में हमनें कोई कमी नहीं छोड़ी है। पेड़ों की खासतौर से छायादार पेड़ों की अंधाधुंध कटाई करने में हमने कोई कमी नहीं छोड़ी तो दूसरी और चाहे गांव हो या शहर आंख मींचकर कंक्रिट का जंगल खड़ा करते रहे और उसका दुष्परिणाम सामने हैं। जल संग्रहण के परंपरागत स्रोतों को नष्ट करने में भी हमने कोई गुरेज नहीं किया। किसी जमाने में हमारे यहां मौसम के अनुसार खान-पान की समृद्ध परंपरा रही है पर उसे आज भुला दिया गया है। मौसम विज्ञानियों का मानना है कि पहले समुद्र में तापमान बढ़ने के साथ ही आंधी-तूफान का माहौल बन जाता था और बरसात होने से लोगों को तात्कालीक राहत मिल जाती थी। पर आज तो समुद्र का तापमान बढ़ने के बावजूद हीटवेव का असर ही अधिक हो रहा है।

ऐसे में अब तात्कालीक व दीर्घकालीक योजनाएं बनाकर भविष्य की रुपरेखा तय करनी होगी। क्योंकि यह तो साफ हो चुका है कि प्रकृति का हमनें इतना दोहन कर लिया है कि हालात निकट भविष्य में सुधरने की लगते नहीं हैं। एक समय था जब एक टेबल फैन या सिलिंग फैन प्रतिष्ठा का विषय होता था, पर अब तो कूलर भी कहीं पीछे छूट गए हैं और एसी आम होता जा रहा है। एसी के चलते वातावरण में गर्मी और अधिक बढ़ रही है। इसलिए अब सुविधाओं और प्रकृति के बीच सामंजस्य की और ध्यान देना होगा नहीं तो आने वाले साल और अधिक चुनौती भरे होंगे। कंक्रिट के जंगलों से लेकर हमारे दैनिक उपयोग के अधिकांश साधन तापमान को बढ़ाने वाले ही हैं। इस चुनौती से निपटना ही होगा। अब सम्मेलनों के प्रस्तावों से आगे बढ़कर क्रियान्वयन पर जोर देना होगा। वातावरण अनुकूल मकानों के निर्माण की तकनीक की और जाना पडेगा वहीं वातावरण को आग का गोला बनने से रोकने के ठोस प्रयास करने होंगे।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ.राजेन्द्र प्रसाद शर्मा
(वरिष्ठ लेखक)

संत श्री चोखादास के परम भक्त थे रावराजा प्रतापसिंह

डॉ. डी. सी. मीना

राव प्रतापसिंह का उदय ऐसे समय हुआ जब 18वीं शताब्दी एवं मुगल साम्राज्य दोनों का उतरार्द्ध का समय था तथा विभिन्न धर्मों एवं जातियों के साहसी लोग विघटित साम्राज्य के खंडहरों पर अपने लिए प्रभुत्व एवं भाग्य बनाने का प्रयास कर रहे थे। 25 नवम्बर, 1775 ई. में रावराजा प्रतापसिंह द्वारा अलवर राज्य की स्थापना से पूर्व भौगोलिक दृष्टि से यह क्षेत्र निम्नलिखित पाँच देशों में विभक्त था–

1.राठ देश, : राज्य की उत्तरी-पश्चिम में स्थित है, जो दिल्ली के प्रसिद्ध राजा पृथ्वीराज का वंशज होने का दावा करते हैं। चौहान राजपूत मदन ने सन् 1170 ई. में मुण्डावर की स्थापना की। उनके वंशज हंसाजी ने राव की उपाधि प्राप्त की। उनके ही वंशज मुण्डावर के वर्तमान राव हैं। खान हरदौजी ने बड़ौंद परिवार की स्थापना की।

2. वाल देश:– अलवर राज्य की पश्चिमी सीमा पर स्थित है और मुख्य रूप से शेखावत राजपूतों के कब्जे में था। कहा जाता है कि शेख जी के पुत्र रायमल इस राज्य (वर्तमान बानसूर क्षेत्र) में वाल परिवारों के पिता थे। इसका क्षेत्रफल 226 वर्गमील था।

3. राजावत देश:– राज्य के दक्षिण-पश्चिमी में स्थित यह क्षेत्र वर्तमान थानागाजी क्षेत्र से मेल खाता है। भानगढ़ यहां का सबसे बड़ा शहर था। एक समय यहां जयपुर के राजावत राजपूतों के कब्जे में क्षेत्र का एक हिस्सा रहा, वे आमेर के राजा भगवंत सिंह के वंशज थे। इसका क्षेत्रफल 365 वर्गमील था।

4. मेवात:– नरू खण्ड को छोड़कर राज्य का शेष भाग मेवात में है, जिसमें आधे से अधिक क्षेत्र शामिल हैं। अलवर नगर इसी क्षेत्र में स्थित है। यहां के अधिकांश निवासी मेव हैं, वे मुसलमान हैं, लेकिन राजपूत मूल के होने का दावा करते हैं। एक मेवाती कवि ने मेवात की भौगोलिक स्थिति का निम्न शब्दों में वर्णन किया है:–

''इत दिल्ली, उत आगरो, इत अलवर बैराठ, कालो पहाड़ सुहावनों, जाके बीच बसो मेवात।''

5. नरूखण्ड:– यह क्षेत्र नरूका राजपूतो का देश राज्य के दक्षिण-पूर्व में स्थित है। नरूका राजपूतों ने राज्य के आधार का निर्माण कर अलवर राज्य की स्थापना की। अलवर राज्य के राजा कच्छवाहा राजवंश की लालावत नरूका शाखा के हैं। अलवर के नरेश आमेर के चौदहवें राजा राव उदयकरण के ज्येष्ठ पुत्र बरसिंह के वंशज हैं। वरसिंह के पौत्र नरू से नरूका शाखा चली और नरू के पुत्र राव लाला से लालावत नरूका कहलाये। इनके वंशज कल्याण सिंह ने मिर्जा राजा जयसिंह के पुत्र कीर्ति सिंह के साथ मिलकर कामां (भरतपुर) के उपद्रवी मेवों का दमन किया। जयपुर नरेश रामसिंह ने कल्याणसिंह की सेवाओं से प्रसन्न होकर माचाड़ी, राजगढ व आधा राजपुर के साथ ढाई गांव की जाग़ीर 25 सितम्बर, 1671 में कल्याण सिंह को प्रदान की। एक स्थानीय किवदन्ती उस कारण से संबंधित है जिसने कल्याणसिंह को माचाड़ी लौटने के लिए प्रेरित किया। ऐसा कहते हैं कि उन्होने सती होने से ठीक पहले खेरात सिंह की विधवा से निर्देश मांगा जिसने सती होने से ठीक पहले उत्तर दिया कि:-

''जाओ बस, अब देश में, राव कल्याणजी आप, आगे कुल में होंगें, प्रताप एक प्रताप।''

जोरावर सिंह के पुत्र मौहब्बत सिंह माचाडी के जागीरदार बने, जो 1756 में बरवाड़े के युद्ध में जयपुर की ओर से लडते हुए वीरगति को प्राप्त हुआ। मौहब्बत सिंह की मृत्यु के बाद इनके पुत्र प्रतापसिंह माचाड़ी के जागीरदार बने जिन्होंने राजगढ में अपने दिवंगत पिता मौहब्बत सिंह की स्मृति में विशाल छतरी बनवाई। प्रताप सिंह का जन्म माचाडी में 01 जून 1740 को मौहब्बत सिंह एवं उनकी रानी बख्तांकवर के घर हुआ। पिता की मृत्यु के बाद प्रतापसिंह को एकमात्र जन्मसिद्ध अधिकार के रूप में उल्वर क्षेत्र के नरूखंड में ढाई गांव विरासत में मिले और उन्हे तब तक 'अढाई गांव का ठाकुर' कहा जाता था। प्रतापसिंह के महान नाम एवं कार्यों को स्वभाविक रूप से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को सौंप दिया गया। शुरूआत में प्रतापसिंह माचाड़ी के राव के रूप में जाने जाते थे और जयपुर के राजा माधोसिंह के अधीन आने वाले माचाडी के जागीरदार थे। उस समय अलवर एक अन्य रियासत थी जो भरतपुर के अधीन आती थी।

प्रतापसिंह की ऊर्जा, अभिव्यक्ति, शारीरिक शक्ति एवं व्यक्तिगत चरित्र ने उन्हे आमेर दरबार में एक प्रमुख व्यक्ति बना दिया। जयपुर दरबार में राजा के दाहिनी ओर (प्रथम सीट) बैठने को लेकर प्रताप सिंह का चौमूं के ठाकुर जोधसिंह से विवाद हो गया। विवाद को शांत करने के लिए राजा द्वारा आदेश पारित किया गया कि एक दिन राव प्रताव सिंह एवं दूसरे दिन जोधसिंह उसी स्थान पर बैठेंगे लेकिन राव प्रताव सिंह चौमूं के ठाकुर जोधसिंह की आखों में खटकने लगे। प्रतापसिंह ने सर्वप्रथम अपने मुखिया के आदेश की पालना करते हुए उनियारा के अशांत नरूकाओं को शांत करने का महत्वपूर्ण कार्य किया। यहीं से आमेर प्रमुख और प्रतापसिंह के बीच भय एवं अविश्वास की शुरूआत हुई।

गंगाधर तांतिया के नेतृत्व में रणथम्भौर के किले पर मराठों ने चढाई कर दी तब प्रतापसिंह ने बड़ी वीरता दिखाते हुए 18 नवम्बर, 1759 को काकोड के युद्ध में मराठों को हरा दिया तथा रणथम्भोर पर महाराजा माधोसिंह का अधिकार हो गया। रणथम्भौर विजय के बाद प्रतापसिंह की प्रसिद्वि बहुत बढ़ गई। राव प्रताप सिंह की आखों के छल्लों ने एक ज्योतिषी का ध्यान आकृष्ट किया जिसने शाही गरिमा की अंतिम प्राप्ति का संकेत दिया जो उनके निर्वासन का कारण बना। राजा माधोसिंह को ज्योतिषियों एवं कुछ दरबारियों ने भड़का दिया जिससे राजा माधोसिंह ने शिकार करने के बहाने प्रताप सिंह पर हमला कर दिया, इस विषय में कहावत है कि–

''जापर रामचंद्र कृपालु, कोटि वैरी, करो छलबल होत न बांको बाल।"

लेकिन प्रताप सिंह बाल-बाल बच गये। प्रताप सिंह ने जान बचाने के लिए इस क्षेत्र को छोडना ही उचित समझा एवं राजगढ चले गये। शरणागत के रक्षक महाराजा सूरजमल की मृत्यु के बाद राव प्रताप सिंह उनके उत्तराधिकारी महाराजा जवाहर सिंह के साथ रहे।

माचाड़ी के राव प्रतापसिंह ने इन सभी परिस्थतियों को बहुत ही चतुराई से अपने लिए अनुकूल बनाया। बाद में महाराजा जवाहर सिंह के शिविर को छोड़कर अलवर की ओर से जयपुर जाकर मावंडा और मंडोली के युद्ध में प्रतापसिंह ने जयपुर नरेश का साथ दिया एवं युद्ध में जीत जयपुर नरेश की हुई। इस युद्ध में प्रतापसिंह के प्रमुख साथी खेड़ा के मंगलसिंह तथा मनोहरपुर के इन्दरसिंह गम्भीर रूप से घायल हो गये। प्रतापसिंह के लिए यह युद्ध पूरी तरह साकार हुआ। जयपुर नरेश माधोसिंह ने पहले तो इस जीत की खुशी में उन्हें न केवल अपनी पिछली गलतियों के लिए क्षमा किया गया, बल्कि माचाड़ी की जागीर को बहाल कर दिया और राजा शब्द को उनके पूर्व शीर्षक के साथ जोड़ने का समर्थन किया तथा राजगढ़ में किला बनाने की अनुमति दी। इसके बाद प्रतापसिंह ने खुद मुख्तार होने की कार्यवाही की और सन् 1770 ई.में टहला और राजपुर में गढ़ बनवाये।

जयपुर में माधोसिंह की मृत्यु के बाद हुए विकार में उसने टहला, राजपुर, प्रतापगढ, अजबगढ और गाजी का थाना पर कब्जा कर लिया। आगरा को मुक्त कराने के लिए बरसाना की लड़ाई में शाही सेना का पक्ष लिया जिसके लिए उन्हे पुरस्कार स्वरूप सीधे दिल्ली के बादशाह से राव राजा की उपाधि तथा सनद प्राप्त की। इस प्रकार माचाडी जयपुर से स्वतंत्र होकर सीधे दिल्ली दरबार के अधीन एक स्वतंत्र जागीर बनी। प्रतापसिंह को 15 तोपों की सलामी, 2180 घुड़सवार सेना, 3676 पैदल सैनिक, 351 तोपों को रखने की मान्यता दी गई। उन्हे 'माही मरातिब' नामक बहुप्रतीक्षित प्रतीक चिन्ह भी प्राप्त हुआ। अलवर की चौकी का वेतन जो उस समय भरतपुर वहन करता था, राज्य में प्रचलित अराजकता के कारण बकाया था। इसके कमाण्डर फौजदार नवलसिंह ने टहला में प्रतापसिंह से मुलाकात कर आपसी वार्तालाप से 25 नवम्बर, 1775 को अलवर को सौंप दिया। इस प्रकार अलवर रियासत का एक स्वतंत्र राज्य के रूप में उदय हुआ। प्रताप सिंह की मृत्यु जनवरी 1791 ई. को हुई। प्रताप सिंह के अंतिम समय में अलवर राज्य की ख्याति जोधपुर एवं जयपुर के समकक्ष थी।

प्रतापसिंह के कोई संतान नहीं थी। अत: उसने मृत्यु के पहले थाना के ज़ागीरदार धीरसिंह के पुत्र बख्तावरसिंह को गोद लेकर उसे अपना उत्तराधिकारी बना दिया था। अपने उत्तराधिकारी के चुनाव के लिए उसने 12 कोटड़ियों के लड़कों को इकट्ठा किया। उनके सामने विभिन्न प्रकार के खिलौने व अस्त्र-शस्त्र रख दिये और उन्हे अपनी पसन्द की वस्तुए लेने को कहा गया। बख्तावरसिंह ने तब और बालकों की भांति खिलौने पसन्द न कर ढाल-तलवार पसन्द की। अत: प्रतापसिंह ने रक्त संबंध में निकटता की बजाय योग्यता के आधार पर बख्तावरसिंह को अपना उत्तराधिकारी चुना। बख्तावरसिंह ने भी रावराजा प्रतापसिंह की विलय नीति का पालन किया। इस प्रकार अलवर राज्य की उत्पत्ति एक उल्लेखनीय व्यक्ति की प्रतिभा एवं कौशल के कारण हुई जिसने जयपुर के महाराजाओं के अधीन ढ़ाई गांव की अपनी मूल विरासत का विस्तार कर एक स्वतंत्र राज्य की स्थापना की जो आकार में इंग्लैण्ड की दो कांउटियों के बराबर था जिसको बख्तावर सिंह ने पूर्ण आकार दिया। अलवर राज्य की स्थापना के लगभग 100 वर्ष बाद प्रताप सिंह की नीतियों का अनुसरण कर यूरोप में जोसेफ मैजिनी, कावूर एवं गैरीवाल्डी ने 1870-71 ई. में इटली का तथा बिस्मार्क ने जर्मनी का एकीकरण किया।

अलवर राज्य के संस्थापक राव राजा प्रताप सिंह जयंती पर आलेख।
–डॉ. डी. सी. मीना,
आर ए एस

मां से बिछुड़ा पैंथर शावक गेनोली गांव में ग्रामीण के बाड़े में घुसा

मांडलगढ़, (निसं)। मांडलगढ़ के पास गेनोली गांव की नई बस्ती के एक बाड़े में पैंथर शावक के मूवमेंट से ग्रामीणों में दहशत फैल गई। सूचना पर मांडलगढ़ वन विभाग की टीम मौके पर पहुंची और पांच घण्टे तक रेस्क्यू ऑपरेशन चला कर पैंथर शावक को पिंजरे में कैद किया। रेस्क्यू के दौरान ग्रामीणों की मौके पर भारी भीड़ जमा हो गई। पुलिस को सूचना दी गई लेकिन पुलिस के नहीं आने से भीड़ को नियंत्रित करने के लिए वनकर्मियों को काफ़ी मशक्कत करनी पड़ी।

मांडलगढ़ वन विभाग के क्षेत्रीय वन अधिकारी पुष्पेंद्र सिंह राणावत, सुरेश चौधरी ने बताया कि गेनोली में पैंथर के मूवमेंट की सूचना मिलने पर पिंजरा, रेस्क्यू किट और टीम के साथ मौके पर पहुंचे, जहां नई बस्ती की पहाड़ी पर पैंथर शावक जो करीब 6-7 माह का बताया जा रहा है तथा गेनोली नाका वनकर्मियों के मुताबिक निकट के जंगल मे मादा पैंथर के साथ दो शावक होने की जानकारी दी। सम्भवतया उक्त पैंथर शावक मां से बिछुड़ कर पानी की तलाश में गेनोली की नई बस्ती में आ गया। मांडलगढ़ वन विभाग की टीम में शामिल करीब 12 वनकर्मियों ने सावधानी बरतकर सुरक्षित रेस्क्यू ऑपरेशन कर शावक को पिंजरे में कैद किया। पैंथर शावक को भोजन पानी देने के साथ मांडलगढ़ से पशु चिकित्सक से पैंथर शावक का उपचार कराया गया।

मांडलगढ़ के गेनोली गांव में पैंथर शावक के मूवमेंट से ग्रामीण दहशत में आ गए।

- **लोग दहशत में आए, वन विभाग की टीम ने 5 घण्टे रेस्क्यू कर पैंथर शावक को पिंजरे में कैद किया**
- **'पैंथर शावक का स्वास्थ्य परीक्षण करा पूर्ण स्वस्थ होने पर गेनोली के जंगल में वापस छोड़ा जाएगा'**

वन विभाग के रेंजर पुष्पेंद्र सिंह ने बताया कि पैंथर शावक को कोटा भेज कर स्वास्थ्य परीक्षण कराया जाएगा और पूर्ण स्वस्थ होने पर पैंथर शावक को गेनोली के जंगल में वापस छोड़ा जाएगा, ताकि शावक अपनी मां के साथ प्रशिक्षित हो सके।

ओमप्रकाश पुरोहित ने देहदान का संकल्प लिया

भीलवाड़ा, (निसं)। मृत्यु के बाद भी पार्थिव देह खाक हो जाने के बजाय पीड़ित मानवता की सेवा में कार्य आए इसी नेक विचार से प्रेरित होकर सहकारिता क्षेत्र में सक्रिय भीलवाड़ा के वरिष्ठ समाजसेवी ओमप्रकाश पुरोहित ने देहदान का संकल्प लिया है।

ओमप्रकाश पुरोहित श्री महावीर युवक मण्डल सेवा संस्थान भीलवाड़ा के देहदान के लिए प्रेरित करने के लक्ष्य से चलाए जा रहे अभियान से प्रेरणा लेकर इस पुनीत कार्य में सहभागी बने। पुरोहित ने परिजनों की मौजूदगी में देहदान का संकल्प पत्र भरकर श्री महावीर युवक मण्डल सेवा संस्थान को सौंपा। मण्डल ने मानवता की उत्कृष्ट सेवा के लिए पुरोहित की पहल की अनुमोदना करते हुए उन्हें अभिनंदन पत्र सौंपा।

मण्डल के अध्यक्ष पुखराज चौधरी ने कहा कि मानव सेवा की भावना से ओतप्रोत होकर श्री पुरोहित द्वारा लिया गया यह निर्णय अन्य लोगों को भी देहदान के लिए संकल्पित होने की प्रेरणा देगा। मण्डल के मंत्री नितिन बापना ने बताया कि मण्डल देहदान की प्रेरणा को लेकर निरन्तर अभियान चला लोगों को प्रेरित करने का प्रयास कर रहा है। उन्होंने देहदान का संकल्प लेने पर ओमप्रकाश पुरोहित के प्रति आभार जताया। इस अवसर पर मण्डल के पंकज लालानी, नरेन्द्र सिसोदिया, योगेश सिसोदिया, दीपक बोथरा, मुकेश आंचलिया, पीयूष सूरिया, कमलेश सिसोदिया, अनुज संचेती, संदीप कच्छारा, पंकज पंचोली आदि भी मौजूद थे।

ओमप्रकाश पुरोहित ने परिजनों की मौजूदगी में देहदान का संकल्प पत्र भरकर सौंपा।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

शनिवार 1 जून, 2024

ज्येष्ठ मास, कृष्ण पक्ष, नवमी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2081, उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र रात्रि 3:16 तक, प्रीति योग दिन 3:10 तक, गर करण प्रात: 7:25 तक, चन्द्रमा आज मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-वृष, चन्द्रमा-मीन, मंगल-मीन, बुध-वृष, गुरू-वृष, शुक्र-वृष, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज भद्रा सांय 6:15 से आरम्भ होगी। मंगल अश्विनी मेष राशि में दिन 3:37 पर प्रवेश करेगा। आज पंचक है और दशमी तिथि का क्षय हुआ है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 7:19 से 9:01 तक, चर 12:24 से 2:06 तक, लाभ-अमृत 2:06 से 5:30 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 5:37, सूर्यास्त 7:12

मेष

घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा।

वृष

आर्थिक/वित्तिय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी बनी रहेगी।

मिथुन

व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी।

कर्क

नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा है। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

सिंह

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा में दुर्घटना का भय है।

कन्या

व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

तुला

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित विवादों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त कार्य व्यवस्थित होने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। स्वास्थ्य में सुधार होगा।

वृश्चिक

परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आवश्यक कार्यों के संबंध में दुविधा अभी बनी रहेगी। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

धनु

घर-परिवार में आपसी मतभेद हो सकते हैं। वाद-विवाद हो सकता है। खान-पान के कारण स्वास्थ्य खराब हो सकता है। अतिथियों के आगमन से दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है।

मकर

परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कुंभ

आर्थिक कारणों से अटके हुए व्यावसायिक कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

मीन

मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।